प्रफुल्ल कोलख्यान



बाघ और बानर के अश्लील विकल्पों के बीच और अन्य कविताएँ

लेबल: **प्रफुल्ल कोलख्यान की कविताएँ**

1.बाघ और बानर के अश्लील विकल्पों के बीच

जब व्यवस्था बाजार के हवाले हो जाये

और बाजार, बाजीगर का अखाड़ा

तब आदमी बाघ और बानर के अश्लील विकल्पों के बीच

औंधे मुँह गिरा होता है

चारों ओर अपनी समस्त विद्रूपताओं के साथ

उगने लगता है जंगल

जंगल जो दीखता नहीं है मगर होता है

इतिहास अपनी मौत के एलान पर

पगलाये कुत्ते की तरह रोता है

सभ्यता और संस्कृति फटी कमीज की तरह
अंतत: एक दिन खूँटी से भी गायब हो जाती है

जिसका कुत्ता जितना झक्क होता है
मुँह चुराती नैतिकता के संविधान में छिपे रहने पर
उसे उतना ही शक होता है

आस्था का आधार, जब बन जाता है बाजार
आदमी के दिमाग में न-दर्शन बचता है
न-दल, न-संवेदना बचती है, न-सोचने का बल
शब्द मरने लग जाते हैं, बिखरने लग जाते हैं अर्थ
और सूखे हुए घाव के बड़े निशान
ताजा खरोंचों की करुण डोर पकड़
रक्त-संचार की जड़ में टूटे हुए जहाज की तरह,
बैठने लग जाते हैं
लाभ और लोभ तोष और क्षोभ
बटखरे की तरह इस्तेमाल होने लग जाते हैं
परदु:ख-कातरता धर्म-काँटा की नोक पर
आदिमजात के अंतिम अश्रुकण की तरह
पथरायी रह जाती है

2. जरूरी है देश

मूसलधार वर्षा के बाद उगी धूप में

खिलखिला उठती है बरसाती पनाली

जब किसी बूढ़े वृक्ष के बिछे हुए तने पर

फुदकते हुए पार हो जाती है नन्ही गिलहरी

सहम उठता है वृक्ष का बिछा हुआ तना कि

आदमी और आदमी के बीच, आदमी और प्रकृति के बीच

अविश्वास का धुआँ, होता चला गया है इतना घना

कि वह अब, जोड़ने की किसी तमीज तक

उसे पहुँचाने में असमर्थ है, कि प्रकृति का समर्थ संकेत भी

आदमी के लिए व्यर्थ है

स्तब्ध है, वृक्ष का बिछा हुआ तना कि

अब कोई मरणासन्न बूढ़ा, अपने बेटों को एकता का

पाठ पढ़ाने के बहाने, उसकी सूखी टहनियों को

जोड़कर एक नहीं करता

क्षुब्ध है, वृक्ष का बिछा हुआ तना कि

दुनिया के विश्वग्राम में बदलते जाने पर वे भी

नाच में शामिल हैं,जिनका अपना गाँव

उजड़ गया है इस आँधी में

दुखी है, बहुत दुखी है, वृक्ष का बिछा हुआ तना कि

उसने आदमी और आदमी के बीच बढ़ती दूरियाँ देखी हैं

संततियों के लगातार दूर होते जाने की

बनती मजबूरियाँ देखी है

बहुत परेशान है, वृक्ष का बिछा हुआ तना कि

कोई ईश्वर नहीं, कोई धर्म नहीं, कोई ग्रंथ नहीं,

कोई ज्ञान नहीं, कोई विज्ञान नहीं, कोई विवेक नहीं

जो एहसास करा सके आदमी को कि जब नैया डूबती है

तब बचते वे भी नहीं, जिनके पैर में

खूबसूरत, चमकदार, कीमती जूते होते हैं

जब डूबता है देश, तब डूब जाते हैं, सारे महेश-गणेश-सुरेश

इसलिए जरूरी है देश -

नारे की शक्ल में, मगर पत्थर की तरह उछाल भर देने से

जरूरत की परवरिश नहीं हो जाती है

सहमा हुआ, स्तब्ध, दुखी, परेशान वृक्ष का बिछा हुआ तना

आज भी लुकाठी की तरह जलने को है तैयार

उसे बस कबीरायी साहस का है इंतजार

3. सपना और साहस

जब रात का सन्नाटा तारी हो

पेट भरा हो

तब अपने भीतर के शोर और सवाल को

होशियार लोग

पाँव से निकाले गये मौजे की तरह

अपने कीमती जूते में घुसेड़ कर

किसी बहुराष्ट्रीय सपने में घुसने की तैयारी करते हैं

सभ्यता के कायदे से जूता पहनकर

सपनों में टहलना गुनाह है

सपनों को शोर पसंद नहीं

सपनों को सवाल पसंद नहीं

निस्पंद प्रवाह सपना को प्रिय है

उड़ते हुए बादलों के टुकड़ों के संग
फूलों की घाटी में खेलती हुई चाँदनी का
सपनों में होना बेहद जरूरी है

सपनों के लिए जरूरी है
और भी बहुत कुछ -
- जैसे साहस

सपना विहीन जीवन व्यर्थ है
और साहस विहीन सपना ऐय्याशी

4. धरती की ओर से दी गई राहत

तप-शून्य लोग सबसे अधिक परेशान हैं ताप से
बुद्धिजीवी हुए तो संताप से

ताप से परेशान तपस्वी आकाश को निहारते हैं
याचक नजर से, ढूँढ़ते रहते हैं आकाश में आशा

वे क्या समझेंगे बादलों के गर्जन की तर्जन की
बिजली की ऊर्जस्वित भाषा

कैसे समझेंगे कि बादलों में बोलता है
सागर का सरिता का, ताल का तलैया का
प्रकृति की गति का दर्द

वे तो समझते हैं -
- बादल
मौसम विभाग के वेतन पर पलता है
और मौसम विभाग
उनके द्वारा अदा किये गये टैक्स से चलता है
वे नहीं मानते कि आकाश में बादल का होना
धरती की ओर से दी गई राहत है
वे नहीं मानते कि उनके इसी रवैये से
प्रकृति भी, जीवन भी आज सब से अधिक आहत है।